CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2022 with Solution PDF-Set 2/6/1 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 40

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 7 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2, 3, 4, 7 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

अचानक माँ की तबियत बिगड़ने पर [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में घटना का सजीव चित्रण, भावों का स्वाभाविक विकास और अनुभव से निकला विचार प्रमुख होते हैं। इस विषय में माँ की अचानक बिगड़ी तबीयत से उत्पन्न चिंता और परिवार की जिम्मेदारी केंद्र में रहेगी।
- प्रथम पुरुष में लिखा गया संस्मरणात्मक लेख व्यक्तिगत अनुभव को प्रभावशाली बनाता है। घटनाओं का क्रम, छोटे संवाद और परिवेश का वर्णन लेख को संगठित रखते हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक के बाद शांत घरेलू वातावरण से आरंभ करें। फिर माँ की अस्वस्थता, अपनी प्रतिक्रिया, समय पर सहायता और स्वस्थ होने पर मिली राहत का क्रम रखें। अंतिम विचार में माँ के श्रम के प्रति संवेदनशीलता आए। लेख में अनावश्यक भूमिका या पत्र का प्रारूप न जोड़ें।

चरण 2: विषयवस्तु और भावों की योजना कहानी का तनाव माँ की कमजोर आवाज और अपनी घबराहट से उभरेगा। पड़ोस की सहायता तथा चिकित्सक से संपर्क जैसी घटनाएँ जिम्मेदारी का बोध कराएँगी। अंत में केवल भावुक घोषणा करने के स्थान पर घरेलू काम में सहयोग का ठोस संकल्प रखें। नीचे का आदर्श लेख निर्धारित 150–200 शब्दों की सीमा में है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **अचानक माँ की तबियत बिगड़ने पर**

उस सुबह घर में रोज जैसी चहल-पहल थी। माँ रसोई में नाश्ता बना रही थीं और मैं विद्यालय जाने की तैयारी कर रहा था। तभी बर्तन गिरने की आवाज आई। दौड़कर पहुँचा तो माँ कुर्सी पर बैठी थीं। उनका चेहरा पीला पड़ गया था और वे कमजोरी महसूस कर रही थीं।

पहले तो मैं घबरा गया। जिस माँ ने हमेशा मुझे सँभाला था, आज उन्हें मेरी जरूरत थी। मैंने चूल्हा बंद किया, माँ को सहारा देकर आराम से बैठाया और पिताजी को फोन किया। पड़ोस की चाची भी तुरंत आ गईं। उनकी सहायता से हम माँ को पास के चिकित्सालय ले गए। डॉक्टर ने जाँच की और कुछ समय निगरानी में रखने को कहा।

प्रतीक्षालय में बैठा मैं सोचता रहा कि माँ बिना शिकायत कितने काम करती हैं। हम उनकी थकान को कितना साधारण मान लेते हैं! थोड़ी देर बाद उनकी हालत सुधरी तो मेरी आँखों में राहत के आँसू आ गए।

शाम को घर लौटकर मैंने उनके लिए बिस्तर ठीक किया। उस दिन समझ आया कि प्रेम केवल शब्दों से नहीं, जिम्मेदारी निभाने से व्यक्त होता है। मैंने निश्चय किया कि अब घर के कामों में नियमित हाथ बँटाऊँगा।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख घटना, चिंता, सहयोग और आत्मबोध के क्रम से विषय को विकसित करता है। इसका अंत माँ के प्रति प्रेम को व्यवहार में उतारने के संकल्प से होता है।

त्वरित सुझाव: पहले घटना के चार पड़ाव तय करें, फिर 150–200 शब्दों में अनुभव लिखें; अंतिम पंक्ति को उसी घटना से निकली सीख से जोड़ें।

1(ख). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

कल करे सो आज कर [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ी अनुभूति, विचार और उदाहरणों का सहज क्रम होता है। 'कल करे सो आज कर' का आशय काम को टालने के बजाय उचित समय पर आरंभ करना है।
- लेख में आकर्षक आरंभ, विचारों का विस्तार और प्रेरक समापन होना चाहिए। लगभग 150 – 200 शब्दों की सीमा में विषय पर केंद्रित रहना आवश्यक है।

चरण 1: विषय का आशय और लेख की योजना पहले समय की महत्ता से विषय का परिचय दिया जाएगा। उसके बाद विद्यार्थी जीवन के

उदाहरण से बताएँगे कि टालने की आदत छोटी जिम्मेदारियों को कैसे बोझ बना देती है। अंत में नियमित परिश्रम, प्राथमिकता तय करने और आज से शुरुआत करने का संदेश देंगे। विचार यह रहेगा कि तुरंत काम करना जल्दबाजी करना नहीं है; सोचकर बनाई गई योजना को समय पर कार्य में बदलना है।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति शीर्षक स्पष्ट रखें तथा मुख्य लेख को छोटे, परस्पर जुड़े अनुच्छेदों में लिखें। व्यक्तिगत अनुभव जैसा सहज उदाहरण लेख को जीवंत बनाएगा। अनावश्यक उपदेश और एक ही बात की पुनरावृत्ति से बचें। नीचे का मॉडल लेख निर्धारित शब्दसीमा में समय के सदुपयोग को विद्यार्थी के अनुभव से जोड़ता है।

चरण 3: पूर्ण मॉडल लेख **कल करे सो आज कर**

मेज पर खुली पुस्तक मुझे देख रही थी और मैं सोच रहा था कि पढ़ाई कल से करूँगा। तभी दीवार की घड़ी ने जैसे पूछा, 'क्या बीता समय लौटकर आएगा?' सचमुच, आने वाला कल हमारे हाथ में नहीं, लेकिन आज का समय हमारा है।

काम टालना पहले सुखद लगता है, पर धीरे-धीरे अधूरे कार्यों का पहाड़ खड़ा हो जाता है। परीक्षा से एक दिन पहले पूरी पुस्तक याद करने की कोशिश करने वाला विद्यार्थी इस बात को अच्छी तरह समझता है। यदि वह प्रतिदिन थोड़ा पढ़े, तो तनाव घटेगा और समझ भी गहरी होगी। यही बात घर की जिम्मेदारियों और समाज के कार्यों पर भी लागू होती है।

आज काम करने का अर्थ बिना सोचे दौड़ पड़ना नहीं है। आवश्यक कामों की सूची बनाना, प्राथमिकताएँ तय करना और छोटी शुरुआत करना अधिक उपयोगी है। मोबाइल पर व्यर्थ बीतते कुछ मिनट भी किसी अच्छे प्रयास की नींव बन सकते हैं।

सफलता किसी चमत्कारी कल का उपहार नहीं; वह आज किए गए छोटे प्रयासों का परिणाम है। इसलिए जिस अच्छे काम को करने का संकल्प लिया है, उसकी शुरुआत अभी करें। कल का स्वागत आज की तैयारी से ही होगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस विषय का केंद्रीय संदेश है कि समय पर किया गया नियमित प्रयास सफलता का आधार बनता है। मॉडल लेख में अनुभवपूर्ण आरंभ, विद्यार्थी जीवन का उदाहरण और आज से कार्य आरंभ करने का प्रेरक समापन दिया गया है।

त्वरित सुझाव: समय पर लिखते हुए एक ठोस दैनिक उदाहरण चुनें और अंतिम अनुच्छेद में उसी से जुड़ा व्यावहारिक संदेश दें; इससे लेख सामान्य उपदेश बनने से बचता है।

1(ग). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
गाँव की सुबह [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय को अनुभव, कल्पना और संवेदना के सहारे सजीव बनाया जाता है। गाँव की सुबह का वर्णन करते समय दृश्य, ध्वनि, गंध और लोगों की गतिविधियों को एक क्रम में प्रस्तुत करना उपयुक्त है।
- लेख का आरंभ वातावरण से, विस्तार ग्रामीण जीवन की हलचल से और समापन उस अनुभव से मिलने वाले भाव से किया जा सकता है। भाषा सरल, चित्रात्मक और प्रवाहपूर्ण रहनी चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की योजना शीर्षक 'गाँव की सुबह' रखकर सूर्योदय से पहले की शांति से वर्णन आरंभ करेंगे। इसके बाद पक्षियों, पशुओं, खेतों और घरों की गतिविधियों को जोड़ेंगे। अंत में ग्रामीण जीवन की आत्मीयता और प्रकृति से उसके संबंध को व्यक्त करेंगे। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए इसमें पत्र का संबोधन, पता या औपचारिक समापन नहीं आएगा।

चरण 2: संपूर्ण रचनात्मक लेख **गाँव की सुबह**

भोर की पहली किरण अभी क्षितिज पर उभरी ही थी कि गाँव जागने लगा। रात की ठंडक हवा में बाकी थी। घास पर ठहरी ओस की बूँदें उगते सूरज की रोशनी में मोतियों जैसी चमक रही थीं। आम के पेड़ पर बैठी चिड़ियों की चहचहाहट ने वातावरण में मधुर संगीत घोल दिया।

आँगन में दादी तुलसी को जल चढ़ा रही थीं। रसोई से उठती चाय की खुशबू और चूल्हे का हल्का धुआँ सुबह का परिचित चित्र बना रहे थे। गली में दूधवाले की साइकिल की घंटी सुनाई दी। कहीं गाय रँभा रही थी, तो कहीं बछड़ा अपनी माँ के पास उछल रहा था।

किसान कंधे पर फावड़ा रखकर खेतों की ओर निकल पड़े। पगडंडी पर चलते उनके कदमों में परिश्रम और आशा का उत्साह था। स्कूल

जाने वाले बच्चे बस्ते सँभालते हुए एक-दूसरे को पुकार रहे थे। चौपाल पर बैठे बुज़ुर्ग अभिवादन के साथ दिन की शुरुआत कर रहे थे। धीरे-धीरे धूप घरों की छतों पर फैल गई। गाँव की सुबह केवल दिन का आरंभ नहीं, प्रकृति और मनुष्य के आत्मीय संबंध का सुंदर अनुभव थी। उसकी सादगी मन में ताज़गी और विश्वास भर देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख में गाँव की सुबह के प्राकृतिक सौंदर्य और दैनिक जीवन को क्रमबद्ध, चित्रात्मक भाषा में लगभग 150 से 200 शब्दों के भीतर व्यक्त किया गया है।

त्वरित सुझाव: दृश्य को सजीव बनाने के लिए केवल वस्तुओं के नाम न गिनाएँ; उनके रंग, ध्वनि, गंध और गति को अनुभव के साथ जोड़ें।

2(क). कोरोना काल में आम आदमियों द्वारा रोगियों के लिए किए गए सहायता-कार्यों की प्रशंसा करते हुए किसी हिन्दी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक के नाम पत्र सार्वजनिक सरोकार को समाचार-पत्र के माध्यम से समाज तक पहुँचाने का औपचारिक माध्यम है। इसमें प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन और समापन क्रम से लिखे जाते हैं।
- इस पत्र का उद्देश्य कोरोना काल में साधारण नागरिकों द्वारा रोगियों की सहायता के लिए किए गए कार्यों की प्रशंसा करना और ऐसी मानवीय पहल को प्रोत्साहित करना है। भाषा शिष्ट, तथ्यपरक और संवेदनशील होनी चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय करना पहले अपना पता और दिनांक लिखेंगे। इसके बाद किसी हिन्दी समाचार-पत्र के संपादक का पद और पता देंगे। विषय में कोरोना काल के सहायता-कार्यों की प्रशंसा स्पष्ट करेंगे। अंत में प्रकाशन का अनुरोध और नाम के साथ औपचारिक समापन होगा।

चरण 2: मुख्य विचारों का चयन पत्र में भोजन, दवाइयाँ और ऑक्सीजन उपलब्ध कराने, रोगियों को अस्पताल पहुँचाने तथा असहाय परिवारों को सहयोग देने जैसे कार्यों का उल्लेख किया जा सकता है। प्रशंसा केवल सामान्य विशेषणों तक सीमित न रहे; सहयोग के ठोस उदाहरण उसके आधार बनें। इन प्रयासों से रोगियों को मिलने वाले सहारे और समाज में बढ़ने वाले विश्वास को भी स्पष्ट करेंगे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, अशोक नगर
नई दिल्ली – 110018
10 जुलाई, 2022
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी,
नई दिल्ली।
विषय : कोरोना काल में नागरिकों के सहायता-कार्यों की प्रशंसा।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं उन साधारण नागरिकों के सेवा-कार्यों की सराहना करना चाहता हूँ, जिन्होंने कोरोना काल में रोगियों का सहारा बनकर मानवता का परिचय दिया।
संकट के समय अनेक लोगों ने अपने साधनों से जरूरतमंद रोगियों तक भोजन और दवाइयाँ पहुँचाईं। किसी ने ऑक्सीजन की व्यवस्था में मदद की, तो किसी ने अस्पताल तक पहुँचने के लिए वाहन उपलब्ध कराया। युवाओं ने आवश्यक सुविधाओं की सही जानकारी साझा की और अकेले रह रहे बुजुर्गों की सहायता की। अनेक परिवारों ने रोगियों के परिजनों को भोजन दिया तथा आर्थिक कठिनाई झेल रहे लोगों का सहयोग किया।
इन प्रयासों ने पीड़ितों को राहत देने के साथ उनका मनोबल भी बढ़ाया। बिना किसी भेदभाव के की गई यह सेवा समाज की एकजुटता का प्रेरक उदाहरण है। ऐसे नागरिकों के कार्यों को उचित स्थान देकर आपका पत्र अन्य लोगों को भी सहयोग के लिए प्रेरित कर सकता है।

कृपया इस विषय को प्रकाशित कर इन निःस्वार्थ सेवकों के प्रति समाज का आभार व्यक्त करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

अमन कुमार

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार पत्र में कोरोना काल के ठोस सहायता-कार्यों का उल्लेख करते हुए नागरिकों की सेवाभावना की प्रशंसा की गई है और संपादक से उनके योगदान को प्रकाशित करने का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय विषय में उद्देश्य स्पष्ट करें; प्रशंसा के साथ सहायता के ठोस उदाहरण और अंत में प्रकाशन का अनुरोध अवश्य दें।

अथवा

2(ख). आप खुशी/खुशवंत हैं। आपका ए.टी.एम. कार्ड कहीं खो गया है। आपने फोन द्वारा अपना कार्ड ब्लॉक करवा दिया है। आपको दूसरा ए.टी.एम. कार्ड चाहिए। अपनी समस्या तथा आवश्यकता का उल्लेख करते हुए बैंक प्रबंधक को आवेदन-पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बैंक प्रबंधक को आवेदन देते समय प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, स्पष्ट विषय, संबोधन, संक्षिप्त विवरण, विनम्र निवेदन तथा नाम लिखना चाहिए।
- इस आवेदन के मुख्य तथ्य हैं: ए.टी.एम. कार्ड का खो जाना, फोन से उसे पहले ही ब्लॉक करवाना और खाते के संचालन के लिए नया कार्ड माँगना। खाते की पहचान और संपर्क का विवरण देने से बैंक को कार्यवाही में सुविधा होती है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय तय करना खुशी के नाम से आवेदन लिखा जा सकता है। पहले उसका पता और दिनांक लिखेंगे, फिर शाखा प्रबंधक को संबोधित करेंगे। विषय में खोए हुए ए.टी.एम. कार्ड के स्थान पर नया कार्ड जारी करने का अनुरोध स्पष्ट करेंगे। भाषा औपचारिक, शिष्ट और सीधे मुद्दे पर केंद्रित होगी।

चरण 2: आवश्यक तथ्यों का क्रम बनाना मुख्य अनुच्छेद में बैंक में बचत खाता होने की सूचना देंगे। इसके बाद कार्ड खोने और फोन द्वारा उसे ब्लॉक करवाने का उल्लेख करेंगे। अगले अनुच्छेद में धन निकासी तथा अन्य बैंकिंग कार्यों के लिए नए कार्ड की आवश्यकता बताएँगे और जरूरी औपचारिकताएँ पूरी करने की तत्परता व्यक्त करेंगे। पिन या किसी गोपनीय संख्या को पत्र में लिखना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: पूरा आवेदन-पत्र 24, शांति नगर

नई दिल्ली–110001

दिनांक: 25 अगस्त, 2022

सेवा में,

शाखा प्रबंधक महोदय,

भारतीय स्टेट बैंक,

शांति नगर शाखा, नई दिल्ली।

विषय: खोए हुए ए.टी.एम. कार्ड के स्थान पर नया कार्ड जारी करने हेतु आवेदन।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपकी शाखा की बचत खाताधारक हूँ। मेरी खाता संख्या 12345678901 है। कल बाजार जाते समय मेरा ए.टी.एम. कार्ड कहीं खो गया। काफी खोजने पर भी वह नहीं मिला। किसी अनुचित लेन-देन को रोकने के लिए मैंने तत्काल बैंक की फोन सेवा से संपर्क करके अपना कार्ड ब्लॉक करवा दिया है।

कार्ड के अभाव में मुझे धन निकालने तथा दैनिक बैंकिंग कार्यों में कठिनाई हो रही है। अत: कृपया मेरे खाते के लिए नया ए.टी.एम. कार्ड जारी करने की कृपा करें। इसके लिए आवश्यक आवेदन-प्रपत्र और पहचान संबंधी दस्तावेज प्रस्तुत करने तथा निर्धारित शुल्क जमा करने

के लिए मैं तैयार हूँ। कृपया कार्ड मिलने की प्रक्रिया और समय की सूचना मेरे पंजीकृत मोबाइल नंबर पर देने का कष्ट करें।

धन्यवाद।

भवदीया,
खुशी
मोबाइल: 9876543210

चरण 4: निष्कर्ष इस आवेदन में कार्ड खोने, उसे फोन द्वारा ब्लॉक करवाने और नया कार्ड आवश्यक होने का स्पष्ट उल्लेख है। बैंक प्रबंधक से नए कार्ड के लिए विनम्र निवेदन करते हुए पत्र का औपचारिक प्रारूप पूरा किया गया है।

त्वरित सुझाव: विषय में नया कार्ड जारी करने की माँग लिखें और मुख्य अनुच्छेद में यह अवश्य बताएँ कि खोया कार्ड पहले ही फोन से ब्लॉक करवाया जा चुका है।

3(i)(क). नाटक में 'स्वगत कथन' से आप क्या समझते हैं ? आजकल इसे नाटक में कैसे प्रयोग किया जाता है और उसे क्या कहते हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक में पात्रों के संवाद और कार्यों के माध्यम से कथा आगे बढ़ती है। पात्र का अंतर्द्वंद्व व्यक्त करने के लिए स्वगत कथन का प्रयोग किया जाता है।
- स्वगत कथन दर्शकों को पात्र के मन की ऐसी बात बताता है जिसे वह दूसरे पात्रों के सामने प्रकट नहीं करना चाहता।

चरण 1: स्वगत कथन का अर्थ जब नाटक का कोई पात्र अपने आप से बात करता है और अपने मन में उठने वाले विचारों, भावनाओं तथा दुविधाओं को बोलकर व्यक्त करता है, तो उसे 'स्वगत कथन' कहते हैं। मंच पर अन्य पात्र मौजूद हों, तब भी यह माना जाता है कि वे उस कथन को नहीं सुन रहे हैं; दर्शक उसे सुनते और पात्र की मनःस्थिति समझते हैं। इस प्रकार स्वगत कथन पात्र के बाहरी व्यवहार और उसके भीतर चल रहे विचारों के बीच का अंतर स्पष्ट करता है।

चरण 2: आधुनिक प्रयोग और उसका नाम आजकल पात्र के मन में चलने वाली बात को प्रायः मंच के पीछे से सुनाई देने वाली आवाज़ के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। पात्र मंच पर दिखाई दे सकता है, लेकिन वह उन शब्दों को प्रत्यक्ष संवाद की तरह नहीं बोलता। उसकी भीतरी आवाज़ दर्शकों को सुनाई देती है। इस तकनीक को 'वॉयस ओवर' कहते हैं। इससे पात्र के विचारों को व्यक्त करते समय दृश्य की स्वाभाविकता बनी रहती है और उसके मनोभाव भी दर्शकों तक पहुँच जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष स्वगत कथन पात्र का अपने आप से किया गया संवाद है। आधुनिक प्रस्तुति में उसकी आंतरिक बात को पीछे से सुनाई देने वाली आवाज़ के माध्यम से व्यक्त करने की तकनीक 'वॉयस ओवर' कहलाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'अपने आप से बातचीत' का अर्थ लिखें, फिर आधुनिक तकनीक 'वॉयस ओवर' और उसकी प्रस्तुति स्पष्ट करें।

अथवा

3(i)(ख). कहानी से आप क्या समझते हैं ? यह भी लिखिए कि कहानी का संबंध किन लोगों से जुड़ता है और नाटक का संबंध किनसे होता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी कथा साहित्य की गद्य विधा है, जबकि नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत होने वाली दृश्य और श्रव्य विधा है।
- कहानी पढ़ने से तथा नाटक अभिनय और मंचीय प्रस्तुति से अपना प्रभाव उत्पन्न करता है; इसलिए दोनों से जुड़े लोगों की भूमिकाएँ अलग होती हैं।

चरण 1: कहानी का अर्थ कहानी गद्य साहित्य की वह कथात्मक रचना है जिसमें जीवन की किसी घटना, अनुभव, संवेदना या स्थिति को पात्रों और घटनाक्रम के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें कथावस्तु, पात्र, परिवेश, संवाद और वर्णन मिलकर एक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। कहानीकार घटनाओं का वर्णन कर सकता है और पात्रों के मन में उठने वाले विचार भी सीधे बता सकता है। पाठक लिखे हुए शब्दों को पढ़कर अपनी कल्पना में पात्रों, स्थानों और घटनाओं का रूप बनाता है।

चरण 2: कहानी और नाटक से जुड़े लोग कहानी का मुख्य संबंध लेखक और पाठक से होता है। लेखक कहानी लिखता है और पाठक उसे पढ़कर उसका आस्वाद लेता है। नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, अभिनेता और दर्शक से होता है। नाटककार नाट्यालेख लिखता है, निर्देशक उसके मंचन की योजना बनाता है, अभिनेता पात्रों को अपने अभिनय और संवादों से साकार करते हैं तथा दर्शक प्रस्तुति देखकर उसे ग्रहण करते हैं। मंच-सज्जा, प्रकाश और ध्वनि के सहयोगी भी नाटक की प्रस्तुति में योगदान देते हैं। इस प्रकार कहानी में लेखक और पाठक का सीधा संबंध होता है, जबकि नाटक में लिखित रचना सामूहिक रंगकर्म के माध्यम से दर्शक तक पहुँचती है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी जीवन के किसी प्रसंग या अनुभव की गद्यात्मक कथात्मक अभिव्यक्ति है। उसका प्रमुख संबंध लेखक और पाठक से है; नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, अभिनेता और दर्शक से जुड़ता है।

त्वरित सुझाव: दोनों उपप्रश्न अलग रखें: पहले कहानी की परिभाषा दें, फिर लेखक-पाठक और लेखक-निर्देशक-अभिनेता-दर्शक का संबंध स्पष्ट करें।

3(ii)(क). रेडियो नाटक की अवधि सीमित क्यों रखी जाती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम की विधा है; इसमें कथा, पात्र और परिवेश का बोध संवाद, संगीत तथा ध्वनि-प्रभावों से होता है।
- इसकी सफलता श्रोता की एकाग्रता और कल्पनाशक्ति पर निर्भर करती है, इसलिए समय और घटनाओं का संयम आवश्यक है।

चरण 1: श्रव्य माध्यम की सीमा समझें रेडियो में श्रोता पात्रों के चेहरे, उनकी गतिविधियाँ या दृश्य नहीं देख सकता। उसे केवल सुनकर घटनाओं का क्रम समझना और मन में उनका चित्र बनाना पड़ता है। लंबे समय तक इस प्रकार ध्यान केंद्रित रखना कठिन होता है; नाटक अधिक लंबा हो तो श्रोता ऊब सकता है और कथा से उसका संबंध टूट सकता है।

चरण 2: अवधि सीमित रखने का उद्देश्य बताएँ इसलिए रेडियो नाटक की अवधि सीमित रखी जाती है। कम समय में चुनी हुई घटनाएँ, कम पात्र और सार्थक संवाद प्रस्तुत करने से कथा सघन, स्पष्ट और रोचक बनी रहती है। निर्धारित प्रसारण-समय का पालन भी आवश्यक होता है। सीमित अवधि नाटककार को अनावश्यक विस्तार से बचाकर नाटकीय प्रभाव बनाए रखने में सहायता देती है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक की अवधि श्रोता की एकाग्रता, रुचि और कल्पना की सक्रियता बनाए रखने तथा निर्धारित प्रसारण-समय में प्रभावपूर्ण कथा प्रस्तुत करने के लिए सीमित रखी जाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में रेडियो की श्रव्य प्रकृति को श्रोता की एकाग्रता और सीमित अवधि की आवश्यकता से जोड़ें।

अथवा

3(ii)(ख). रेडियो नाटक और सिनेमा में क्या अंतर है और क्यों ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक केवल श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा दृश्य-श्रव्य माध्यम है।
- माध्यम की प्रकृति तय करती है कि पात्र, घटनाएँ और परिवेश किस साधन से दर्शक अथवा श्रोता तक पहुँचेंगे।

चरण 1: प्रस्तुति के साधनों का अंतर स्पष्ट करें रेडियो नाटक में संवाद, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, संगीत और ध्वनि-प्रभावों के द्वारा ही पात्रों तथा घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। स्थान या परिस्थिति की आवश्यक जानकारी भी श्रव्य संकेतों से दी जाती है। इसके विपरीत सिनेमा में संवाद और ध्वनि के साथ पात्रों के हाव-भाव, वेशभूषा, दृश्य, रंग तथा कैमरे से दिखाए गए परिवेश की सहायता मिलती है।

चरण 2: अंतर का कारण बताएँ यह अंतर दोनों माध्यमों की प्रकृति के कारण है। रेडियो का श्रोता केवल सुनता है, इसलिए उसे ध्वनियों के सहारे अपने मन में दृश्य रचना पड़ता है। सिनेमा का दर्शक सुनने के साथ देख भी सकता है; वहाँ अनेक बातें बिना संवाद के अभिनय या दृश्य से स्पष्ट हो जाती हैं। इसीलिए रेडियो नाटक की भाषा और ध्वनि-योजना अधिक संकेतपूर्ण तथा सुनने मात्र से समझ में आने वाली होनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक की अभिव्यक्ति का आधार ध्वनि है और सिनेमा का आधार ध्वनि के साथ दृश्य भी हैं। इसी माध्यमगत अंतर के कारण दोनों की संवाद-योजना और घटना-प्रस्तुति अलग होती है।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय पहले श्रव्य और दृश्य-श्रव्य का भेद लिखें, फिर उसके प्रभाव को एक उदाहरण से स्पष्ट करें।

4(i)(क). समाचार लेखन के छह ककार से आप क्या समझते हैं ? समाचार लेखन में इनकी आवश्यकता क्यों पड़ती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार किसी घटना की तथ्यपूर्ण जानकारी देता है। छह ककार वे मूल प्रश्न हैं जिनके उत्तर से घटना का पूरा परिचय मिलता है।
- छह ककार हैं—क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे। ये समाचार की पूर्णता, स्पष्टता और व्यवस्थित प्रस्तुति का आधार हैं।

चरण 1: छह ककार का अर्थ स्पष्ट करें 'क्या' से पता चलता है कि कौन-सी घटना हुई। 'कब' घटना का समय और 'कहाँ' उसका स्थान बताता है। 'कौन' घटना से जुड़े व्यक्तियों, संस्थाओं या पक्षों की पहचान कराता है। 'क्यों' घटना के कारण का और 'कैसे' उसके घटित होने की प्रक्रिया या तरीके का उत्तर देता है। उदाहरण के लिए विद्यालय में हुई विज्ञान प्रदर्शनी का समाचार लिखते समय आयोजन, तिथि, स्थान, आयोजक और प्रतिभागी, उद्देश्य तथा आयोजन की प्रक्रिया का उल्लेख इन प्रश्नों के अनुसार किया जा सकता है।

चरण 2: समाचार लेखन में आवश्यकता समझाएँ पाठक घटना के विषय में आवश्यक जानकारी एक ही समाचार से प्राप्त करना चाहता है। छह ककार लेखक को जरूरी तथ्य जुटाने और उन्हें सही क्रम में प्रस्तुत करने की दिशा देते हैं। इनके उत्तर मिलने से समाचार अधूरा या अस्पष्ट नहीं रहता और पाठक को घटना का संदर्भ भी समझ में आता है। सामान्यतः समाचार के आरंभिक भाग में क्या, कब, कहाँ और कौन जैसे प्रमुख तथ्यों को रखा जाता है; क्यों और कैसे का आवश्यक विवरण आगे दिया जा सकता है। कारण या प्रक्रिया की जानकारी देते समय अनुमान को तथ्य की तरह प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष छह ककार घटना से संबंधित छह बुनियादी प्रश्न हैं। इनके तथ्यपूर्ण उत्तर समाचार को पूर्ण, स्पष्ट, सुव्यवस्थित और पाठक के लिए उपयोगी बनाते हैं; इसीलिए समाचार लेखन में इनकी आवश्यकता होती है।

त्वरित सुझाव: छह ककार गिनाने के बाद प्रत्येक का अर्थ लिखें और उनकी आवश्यकता को समाचार की पूर्णता से जोड़ें।

अथवा

4(i)(ख). फ़ीचर क्या है ? समाचार और फ़ीचर में अंतर बताते हुए फ़ीचर लेखन का उद्देश्य बताइए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी घटना, व्यक्ति, स्थान या विषय का तथ्यपरक, रोचक और मानवीय संवेदना से युक्त प्रस्तुतीकरण है। इसमें सूचना के साथ अनुभव और परिवेश को भी उभारा जाता है।
- समाचार का प्रमुख लक्ष्य ताज़ा घटना की सूचना देना है, जबकि फ़ीचर विषय की पृष्ठभूमि और उसके मानवीय पक्ष को विस्तार से सामने लाता है।

चरण 1: फ़ीचर का अर्थ स्पष्ट करें फ़ीचर ऐसा सृजनात्मक एवं सुव्यवस्थित लेख है जिसमें किसी विषय के प्रामाणिक तथ्यों को रोचक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। वर्णन, उदाहरण, दृश्य और लोगों के अनुभव इसकी प्रस्तुति को जीवंत बनाते हैं। रचनात्मक शैली का अर्थ मनगढ़ंत तथ्य जोड़ना नहीं है; इसकी विश्वसनीयता के लिए तथ्य सही होने चाहिए।

चरण 2: समाचार तथा फ़ीचर के अंतर बताएँ समाचार तात्कालिक घटना पर केंद्रित होता है और उसमें क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों तथा कैसे जैसी आवश्यक सूचनाएँ संक्षेप में दी जाती हैं। उसकी शैली सामान्यतः सीधी, वस्तुनिष्ठ तथा उल्टा पिरामिड पद्धति पर आधारित होती है। फ़ीचर के लिए तात्कालिक घटना होना आवश्यक नहीं है। इसमें विषय की पृष्ठभूमि, वातावरण, मानवीय अनुभव और संवेदनाओं को अधिक विस्तार मिलता है। उसकी भाषा अपेक्षाकृत चित्रात्मक और सरस हो सकती है तथा प्रस्तुति में रचनात्मक स्वतंत्रता होती है।

चरण 3: फ़ीचर लेखन का उद्देश्य बताएँ फ़ीचर का उद्देश्य पाठक को केवल सूचना देना नहीं, बल्कि विषय की गहरी समझ विकसित करना, उसके मानवीय पहलुओं से परिचित कराना तथा उसकी रुचि बनाए रखना है। वह जानकारी और मनोरंजन के साथ संवेदना तथा जागरूकता भी पैदा करता है। उदाहरण के लिए, जलसंकट की ताज़ा सूचना समाचार हो सकती है, जबकि उससे प्रभावित परिवारों का दैनिक संघर्ष फ़ीचर का विषय बन सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष फ़ीचर तथ्यों पर आधारित रोचक और संवेदनात्मक प्रस्तुति है। समाचार जहाँ घटना की त्वरित सूचना देता है, वहीं फ़ीचर उसके व्यापक और मानवीय पक्ष को समझाकर पाठक को जागरूक करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को परिभाषा, समाचार से अंतर और उद्देश्य के क्रम में लिखें; रोचक शैली को काल्पनिक तथ्य गढ़ने की छूट न मानें।

4(ii)(क). फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहते हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ्रीलांसर पत्रकार स्वतंत्र रूप से काम करता है और किसी एक समाचार-संस्था का स्थायी वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता।
- वह अपनी रिपोर्ट, लेख या अन्य पत्रकारितापरक सामग्री अलग-अलग समाचारपत्रों, पत्रिकाओं अथवा माध्यमों को देकर प्रायः सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक प्राप्त करता है।

चरण 1: फ्रीलांसर पत्रकार की पहचान बताएँ फ्रीलांसर वह स्वतंत्र पत्रकार है जो किसी एक समाचार-संस्था से नियमित नौकरी के रूप में बँधा नहीं रहता। वह विभिन्न संस्थाओं के लिए समाचार, लेख, रिपोर्ट अथवा फ़ीचर तैयार कर सकता है। इसलिए उसे किसी अखबार का स्थायी संवाददाता या नियमित कर्मचारी कहना उचित नहीं होगा।

चरण 2: यह नाम दिए जाने का कारण समझाएँ उसे फ्रीलांसर इसलिए कहते हैं क्योंकि वह स्वतंत्र रूप से अपनी सेवाएँ देता है। किसी एक संस्था से स्थायी वेतन पाने के बजाय उसे सामान्यतः प्रकाशित या स्वीकृत सामग्री के आधार पर भुगतान मिलता है। विषयों और संस्थाओं के चयन में उसे अपेक्षाकृत स्वतंत्रता रहती है, पर तथ्य-जाँच, विश्वसनीयता और पत्रकारिता की नैतिकता का पालन उसके लिए भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी एक संस्था का स्थायी कर्मचारी बने बिना विभिन्न समाचार-माध्यमों के लिए स्वतंत्र रूप से सामग्री तैयार करने

वाला पत्रकार फ्रीलांसर कहलाता है। उसकी स्वतंत्र कार्य-व्यवस्था ही इस नाम का कारण है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में स्वतंत्र काम, एक संस्था की स्थायी नौकरी का अभाव और सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक—ये बातें स्पष्ट करें।

अथवा

4(ii)(ख). संपादकीय से आप क्या समझते हैं ? संपादकीय लिखने में किसी का नाम क्यों नहीं छापा जाता ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचारपत्र की संस्थागत राय व्यक्त करने वाला विचारप्रधान लेख होता है।
- इसमें विषय का विश्लेषण और मूल्यांकन होता है; यह केवल घटना की सूचना या लेखक की व्यक्तिगत राय नहीं है।

चरण 1: संपादकीय का अर्थ बताएँ संपादकीय समाचारपत्र के संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित वह लेख है जिसमें किसी प्रमुख घटना, समस्या या मुद्दे पर समाचारपत्र का अपना दृष्टिकोण सामने आता है। इसमें संबंधित तथ्यों के आधार पर तर्क, विश्लेषण और टिप्पणी प्रस्तुत की जाती है। इसका उद्देश्य पाठक को विषय समझने और उसके बारे में विचार बनाने में सहायता देना है।

चरण 2: लेखक का नाम न छापने का कारण समझाएँ संपादकीय किसी लेखक का निजी मत नहीं, बल्कि पूरे समाचारपत्र की नीति और दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए उसके साथ सामान्यतः किसी व्यक्ति का नाम नहीं छापा जाता। उसे संपादक या संपादकीय मंडल का कोई सदस्य लिख सकता है, पर प्रकाशित विचार की जिम्मेदारी संस्था की होती है। नाम न छापने का कारण लेखक को महत्त्वहीन मानना या लेख को तथ्यहीन मानना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय समसामयिक मुद्दे पर समाचारपत्र की आधिकारिक राय व्यक्त करने वाला विश्लेषणात्मक लेख है। संस्थागत विचार होने के कारण उसमें सामान्यतः व्यक्तिगत लेखक का नाम नहीं दिया जाता।

त्वरित सुझाव: संपादकीय को व्यक्तिगत हस्ताक्षरित लेख से अलग रखें; नाम न होने का कारण समाचारपत्र की संस्थागत राय होना है।

5(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

"फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में बच्चे के प्रति माँ की ममता का अद्भुत वर्णन है।" कैसे ? उदाहरण सहित लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ की रुबाइयों में घरेलू जीवन के सहज दृश्यों से माँ और बच्चे के आत्मीय संबंध का चित्र उभरता है।
- ममता का अर्थ केवल बच्चे की देखभाल नहीं, बल्कि उसकी खुशी, कल्पना और इच्छाओं में स्नेहपूर्वक सहभागी होना भी है।

चरण 1: माँ के वात्सल्य के दृश्य पहचानना फ़िराक़ गोरखपुरी ने माँ के प्रेम को दैनिक जीवन की छोटी-छोटी क्रियाओं में व्यक्त किया है। आँगन में माँ अपने बच्चे को गोद में लेकर झुलाती है और उसे हवा में उछालती है। बच्चे की हँसी से उसका मन आनंदित हो उठता है। वह बच्चे को नहलाती है, उलझे बाल सुलझाती है और साफ कपड़े पहनाती है। इन क्रियाओं में देखभाल के साथ उसका दुलार भी झलकता है।

चरण 2: बच्चे के मन को समझने के उदाहरण देना दीपावली पर माँ घर सजाने के साथ बच्चे के मिट्टी के घरौंदे में भी दीया जलाती है। इससे स्पष्ट होता है कि बच्चे का छोटा संसार भी उसके लिए महत्त्वपूर्ण है। जब बच्चा चाँद लेने की ज़िद करता है, तो माँ दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर उसे बहलाती है। वह उसकी कल्पना का सम्मान करते हुए अपनी सूझबूझ से उसे प्रसन्न करती है। इस प्रकार कवि ने स्नेह, संरक्षण और बाल-मन की समझ को एक साथ चित्रित किया है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चे को झुलाने, सँवारने, उसके घरौंदे में दीया जलाने और दर्पण में चाँद दिखाने के प्रसंग माँ की निश्छल ममता को

सजीव बनाते हैं। साधारण घरेलू कार्यों में व्यक्त यही गहरा वात्सल्य रुबाइयों का विशेष आकर्षण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सामान्य प्रशंसा के साथ झुलाने, घरौंदे में दीया जलाने और चाँद दिखाने जैसे पाठ के ठोस उदाहरण अवश्य जोड़ें।

5(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

तुलसीदास ने पेट की आग को 'समुद्र की आग से बड़ी क्यों' कहा है ? कवितावली पाठ के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवितावली में तुलसीदास ने आजीविका के संकट और भूख से उत्पन्न सामाजिक दुर्दशा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।
- पेट की आग भूख का रूपक है। समुद्र की आग अर्थात बड़वाग्नि से इसकी तुलना भूख की तीव्रता और व्यापक प्रभाव स्पष्ट करती है।

चरण 1: भूख की तीव्रता स्पष्ट करना तुलसीदास के अनुसार भूख मनुष्य को इतना विवश कर देती है कि उसके सामने उचित-अनुचित का भेद भी कमजोर पड़ जाता है। पेट भरने के लिए लोग पढ़ते हैं, अनेक कौशल सीखते हैं, काम-धंधे करते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी भटकते हैं। किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक सभी आजीविका चाहते हैं, किंतु साधन न मिलने पर उनका जीवन संकट में पड़ जाता है। इसलिए भूख केवल शारीरिक पीड़ा नहीं, पूरे जीवन को प्रभावित करने वाली समस्या है।

चरण 2: समुद्र की आग से तुलना का आशय बताना समुद्र की बड़वाग्नि अत्यंत प्रचंड मानी जाती है, पर पेट की आग मनुष्य से उससे भी अधिक कठोर काम करा सकती है। कवि बताते हैं कि पेट के लिए लोग ऊँचे-नीचे कर्म करते हैं, धर्म-अधर्म तक की चिंता छोड़ देते हैं और अपनी संतान को बेचने जैसी अमानवीय स्थिति में पहुँच जाते हैं। भूख मनुष्य की विवेक-शक्ति, मर्यादा और पारिवारिक संवेदना तक को संकट में डाल देती है। इसी विनाशकारी सामर्थ्य के कारण तुलसीदास ने पेट की आग को समुद्र की आग से बड़ी कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष पेट की आग मनुष्य को घोर विवशता में डालकर अनुचित और अमानवीय कर्म तक करा देती है। उसकी इसी असह्य पीड़ा और नैतिक-सामाजिक विनाश की शक्ति को व्यक्त करने के लिए कवि ने उसे बड़वाग्नि से भी बड़ी बताया है।

त्वरित सुझाव: पेट की आग का अर्थ भूख बताकर आजीविका का संकट और संतान बेचने की विवशता का उदाहरण दें; तुलना का कारण अपने आप स्पष्ट होगा।

5(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'उषा' कविता में कवि ने 'सूर्योदय' को किसका जादू टूटना बताया है और यह जादू किन चीज़ों का है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' में भोर का बदलता आकाश घरेलू वस्तुओं और रंगों के बिंबों द्वारा चित्रित हुआ है।
- यहाँ 'जादू' भोर के मोहक प्राकृतिक सौंदर्य और उसके निरंतर बदलते रंगों का है; सूर्योदय उस क्षणिक दृश्य को समाप्त कर देता है।

चरण 1: भोर के जादू का अर्थ कवि ने सूर्योदय को उषा के सौंदर्य का जादू टूटना बताया है। सूर्य के निकलने से पहले आकाश में प्रकाश और रंगों का अद्भुत खेल होता है। वातावरण इतना सम्मोहक लगता है कि साधारण प्राकृतिक दृश्य भी किसी जादुई चित्र जैसा दिखाई देता है। सूरज निकलने पर यह विशेष दृश्य समाप्त हो जाता है और दिन का सामान्य प्रकाश फैल जाता है। इसलिए जादू टूटना किसी दुखद घटना का संकेत नहीं, बल्कि भोर से दिन की ओर प्रकृति के सहज परिवर्तन का रूपक है।

चरण 2: जादू रचने वाले रंग और बिंब यह जादू आकाश की नीलिमा, भोर की नमी, हलके अँधेरे और उभरती लालिमा का है। कवि गहरे नीले आकाश को नीले शंख, भोर के नभ को राख से लीपे गीले चौके तथा लालिमा को केसर से धुली काली सिल से जोड़ता है। कहीं वह स्लेट पर लाल खड़िया मलने जैसा लगता है। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब भी इसी आकर्षक रंग-परिवर्तन को साकार

करता है। ये उपमान उषाकालीन प्रकृति का सम्मोहन रचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सूर्योदय उषा के उस जादू का टूटना है जो भोर के नीले, धूसर और लाल रंगों, नमी तथा झिलमिलाते प्रकाश से बनता है। सूर्य निकलते ही उषा का यह क्षणिक सौंदर्य दिन के उजाले में बदल जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'जादू' को उषा का सम्मोहक सौंदर्य बताइए, फिर कविता के दो-तीन रंग-बिंब देकर सूर्योदय से उनका संबंध स्पष्ट कीजिए।

6(क). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

ढोलक की आवाज़ किस प्रकार से मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी ? 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'पहलवान की ढोलक' में महामारी से जूझते ग्रामीणों के लिए ढोलक की ध्वनि साहस और जीवन-संघर्ष का प्रतीक बनती है।
- 'संजीवनी शक्ति' का आशय रोग का वास्तविक उपचार नहीं, बल्कि निराश मन में जीवित रहने का उत्साह और मृत्यु से लड़ने का मनोबल जगाना है।

चरण 1: गाँव की भयावह स्थिति गाँव में महामारी फैलने से मृत्यु का आतंक छाया हुआ था। रोग, भूख और असहायता के बीच रात का सन्नाटा वातावरण को और भयावह बना देता था। घरों से उठती कराहें और रोने की आवाज़ें लोगों की निराशा बढ़ाती थीं। बार-बार होने वाली मौतों ने गाँव का सामान्य जीवन छीन लिया था; इसी कारण वह 'मृत-गाँव' जैसा प्रतीत होता था। ऐसे समय लोगों को शारीरिक सहायता के साथ मानसिक सहारे की भी आवश्यकता थी।

चरण 2: ढोलक से मिलने वाला साहस इस भयानक सन्नाटे में लुट्टन पहलवान की ढोलक की गूँज लोगों को यह अनुभव कराती थी कि जीवन का संघर्ष अभी जारी है। उसकी लय भय को चुनौती देती और निराश ग्रामीणों में उत्साह भरती थी। पहलवान के अपने दोनों बेटे भी महामारी के शिकार हो गए, फिर भी ढोलक का बजना उसके अदम्य साहस का परिचय देता है। यह ध्वनि दुख के बीच टूटते लोगों को फिर सँभलने और मृत्यु के आतंक का सामना करने की प्रेरणा देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक की आवाज़ महामारी का इलाज तो नहीं करती थी, पर भय और निराशा से घिरे ग्रामीणों को मानसिक बल देती थी। जीवन के प्रति आशा तथा संघर्ष का साहस जगाकर वह मृतप्राय गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी।

त्वरित सुझाव: 'संजीवनी' का अर्थ मानसिक संबल स्पष्ट कीजिए और महामारी के सन्नाटे, ढोलक की लय तथा ग्रामीणों के बढ़ते साहस को आपस में जोड़िए।

6(ख). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

नमक की पुड़िया ले जाने को लेकर सफ़िया के मन में क्या द्वंद्व था ? 'नमक' कहानी के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' में नमक जन्मभूमि की स्मृति और बँटवारे के बाद भी जीवित मानवीय संबंधों का प्रतीक है।
- सफ़िया का द्वंद्व आत्मीय वचन निभाने और सीमा पर लागू प्रतिबंध का सामना करने के बीच है।

चरण 1: नमक ले जाने की भावनात्मक वजह सिख बीबी लाहौर को अपना वतन मानती थीं और सफ़िया से वहाँ का नमक लाने को कहती थीं। सफ़िया उनके लिए नमक ले जाकर अपनी आत्मीयता तथा उनसे किया वादा निभाना चाहती थी। इसलिए उसके लिए नमक

साधारण खाने की वस्तु नहीं, बीबी की जन्मभूमि से जुड़ी यादों और प्रेम की निशानी था।

चरण 2: प्रतिबंध और आत्मसम्मान के बीच उलझन पाकिस्तान से भारत नमक ले जाना प्रतिबंधित था। यह जानकर सफ़िया सोचने लगी कि नमक की पुड़िया कैसे ले जाए। उसे छिपाकर ले जाने पर पकड़े जाने और कस्टमवालों द्वारा सामान की तलाशी लेने की चिंता थी। दूसरी ओर, प्रेम की इस निशानी को चोरी की वस्तु की तरह छिपाना भी उसे उचित नहीं लग रहा था। उसका मन वचन निभाने के लिए नमक ले जाने और उसे छिपाकर ले जाने की विवशता के बीच उलझा हुआ था।

चरण 3: द्वंद्व का समाधान अंततः सफ़िया ने नमक छिपाने के बजाय कस्टम अधिकारी को उसके बारे में बता देने का निर्णय लिया। उसने मानवीय संबंधों की सच्चाई और अपनी भावना को अधिक महत्त्व दिया। इस निर्णय से उसका संकोच दूर हुआ और नमक आत्मीयता का प्रतीक बनकर सामने आया।

चरण 4: निष्कर्ष सफ़िया चाहती थी कि बीबी का वादा भी निभे और नमक चोरी से भी न ले जाना पड़े। प्रतिबंध के बावजूद उसने नमक की बात स्पष्ट रूप से बताकर अपने भावनात्मक और नैतिक द्वंद्व का समाधान किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बीबी का लाहौर-प्रेम, नमक पर प्रतिबंध तथा सफ़िया का छिपाने या बताने का द्वंद्व अवश्य जोड़ें।

6(ग). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जाति-प्रथा आधारित श्रम विभाजन को लेखक ने स्वाभाविक विभाजन क्यों नहीं माना है ? व्यक्ति को स्वयं पेशा चुनने योग्य बनाने के लिए क्या अपेक्षित है ? पाठ के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. भीमराव आंबेडकर श्रम-विभाजन को उपयोगी मानते हैं, पर जाति-प्रथा के जन्म-आधारित श्रमिक-विभाजन का विरोध करते हैं।
- स्वाभाविक पेशा-चयन व्यक्ति की रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण पर निर्भर करता है; उसे वंशानुगत बंधन में नहीं बाँधा जा सकता।

चरण 1: जन्म के आधार पर थोपे गए पेशे की समस्या लेखक के अनुसार जाति-प्रथा व्यक्ति का पेशा उसकी स्वाभाविक रुचि और योग्यता के आधार पर तय नहीं करती। इसमें माता-पिता की सामाजिक स्थिति और जन्म के आधार पर ही उसका काम पहले से निर्धारित कर दिया जाता है। व्यक्ति की वास्तविक क्षमता के विकास से पहले ही उसके भविष्य का निर्णय हो जाता है। इसलिए यह स्वाभाविक श्रम-विभाजन नहीं, बल्कि श्रमिकों को वंशानुगत वर्गों में बाँटने की व्यवस्था है।

चरण 2: स्वतंत्रता और परिवर्तन की गुंजाइश का अभाव जाति-प्रथा में व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता भी बाधित होती है। उद्योग और परिस्थितियाँ बदल जाने पर भी व्यक्ति अपने लिए दूसरा उपयुक्त काम नहीं चुन पाता। अरुचिकर काम में बँधे रहने से उसकी कार्यकुशलता और काम के प्रति लगाव कम हो जाते हैं। यह व्यवस्था व्यक्ति की आवश्यकता तथा समाज की बदलती आर्थिक आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं है।

चरण 3: पेशा चुनने योग्य बनाने की अपेक्षा व्यक्ति को स्वयं पेशा चुनने योग्य बनाने के लिए उसकी क्षमताओं का पर्याप्त विकास होना चाहिए। उसे अपनी रुचि और योग्यता पहचानने, शिक्षा तथा आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करने और अनुकूल अवसर पाने की सुविधा मिलनी चाहिए। साथ ही जन्म से निर्धारित पेशे का बंधन हटे और उसे अपनी क्षमता के अनुसार काम चुनने या बदलने की स्वतंत्रता मिले। तभी उसकी प्रतिभा का सार्थक उपयोग संभव है।

चरण 4: निष्कर्ष जाति-आधारित श्रम-विभाजन अस्वाभाविक है क्योंकि वह रुचि और योग्यता के स्थान पर जन्म को आधार बनाता है। स्वतंत्र पेशा-चयन के लिए क्षमता का विकास, शिक्षा-प्रशिक्षण, अवसर और व्यवसाय की स्वतंत्रता अपेक्षित हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों हिस्सों का उत्तर दें: पहले जन्म-आधारित विभाजन की कमी बताएँ, फिर क्षमता-विकास और स्वतंत्र चयन की आवश्यकता स्पष्ट करें।

6(घ). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

डॉ. भीमराव आंबेडकर की दृष्टि में आदर्श समाज के तीन आधार कौन-से हैं ? तीनों को उल्लेख करते हुए समझाइए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. भीमराव आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज की बुनियाद स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता है। ये तीनों मूल्य परस्पर जुड़े हैं और सामाजिक लोकतंत्र को सार्थक बनाते हैं।
- लोकतंत्र केवल शासन की व्यवस्था नहीं, बल्कि मिलकर रहने तथा एक-दूसरे के अनुभव और हित साझा करने की पद्धति भी है।

चरण 1: स्वतंत्रता का अर्थ आदर्श समाज में प्रत्येक व्यक्ति को जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के साथ अपनी क्षमता के अनुसार आजीविका चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। जन्म या जाति के कारण किसी को एक निश्चित पेशे में बाँध देना इस स्वतंत्रता का निषेध है। व्यक्ति को अपनी शक्तियों का प्रयोग करने और व्यक्तित्व के विकास का अवसर मिलना चाहिए।

चरण 2: समता का महत्त्व सभी व्यक्तियों की क्षमताएँ और सामाजिक परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं होतीं, फिर भी सबके साथ समान मानवीय व्यवहार आवश्यक है। आंबेडकर चाहते हैं कि समाज व्यक्तियों को आरंभ से अधिकतम समान अवसर दे। वंश, शिक्षा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा से मिलने वाले विशेषाधिकारों के कारण किसी को पीछे धकेलना उचित नहीं है।

चरण 3: भ्रातृता और सामाजिक संपर्क भ्रातृता का अर्थ परस्पर भाईचारा, सम्मान और अपनापन है। आदर्श समाज गतिशील होगा; उसमें अनेक हितों का सचेत आदान-प्रदान होगा और एक भाग का परिवर्तन दूसरे भागों तक पहुँचेगा। सामाजिक समूहों के बीच निर्बाध संपर्क तथा सबके प्रति आदर का भाव ही लोकतांत्रिक जीवन को संभव बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार स्वतंत्रता व्यक्ति के विकास का अवसर देती है, समता सबको समान मानवीय प्रतिष्ठा और अवसर दिलाती है तथा भ्रातृता समाज को परस्पर सम्मान से जोड़ती है। इन्हीं तीन आधारों पर आंबेडकर का आदर्श समाज निर्मित होता है।

त्वरित सुझाव: तीनों आधार अलग-अलग लिखें और प्रत्येक को उसके व्यावहारिक अर्थ से जोड़ें: पेशे की स्वतंत्रता, अवसरों की समानता और सामाजिक भाईचारा।

7(i)(क). "सिंधु सभ्यता मूलत: खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी।" कैसे ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के पुरातात्त्विक अवशेषों के सहारे सिंधु सभ्यता की जीवन-पद्धति समझाई गई है। नगरों की समृद्धि के पीछे कृषि और पशुपालन का ठोस आर्थिक आधार था।
- किसी सभ्यता के मूल व्यवसाय का प्रमाण उसकी उपज, खेती से जुड़े अवशेषों, खाद्य-संग्रह और पशुओं के चित्रों या मूर्तियों से मिलता है।

चरण 1: कृषि पर आधारित जीवन सिंधु क्षेत्र की उपजाऊ धरती और नदी का जल खेती के अनुकूल थे। पाठ में गेहूँ, जौ, कपास और दूसरी कृषि-उपज का उल्लेख मिलता है। अनाज के अवशेष तथा उसके भंडारण की व्यवस्था बताते हैं कि लोग व्यवस्थित खेती करते थे। कपास का उत्पादन उनके वस्त्र-निर्माण से भी जुड़ा था। इसलिए नगरों का विकसित जीवन खेती से प्राप्त उपज पर निर्भर था।

चरण 2: पशुपालन के प्रमाण खेती के साथ पशुपालन भी उनकी आजीविका का महत्त्वपूर्ण साधन था। मुहरों, मूर्तियों और अन्य अवशेषों में बैल तथा दूसरे पशुओं की उपस्थिति उनके जीवन में पशुओं का स्थान दिखाती है। बैल कृषि और भार ढोने में उपयोगी थे। पशुओं से लोगों की भोजन तथा अन्य दैनिक आवश्यकताएँ भी पूरी होती थीं। कृषि और पशुपालन एक-दूसरे के सहायक व्यवसाय थे।

चरण 3: नगर-सभ्यता का आर्थिक आधार मोहनजोदड़ो के सुव्यवस्थित नगर, शिल्प और व्यापार उसकी उन्नति बताते हैं, पर इनसे उसका खेतिहर स्वरूप समाप्त नहीं होता। नगरों में रहने वालों के लिए अन्न और अन्य आवश्यक वस्तुएँ कृषि तथा पशुपालन से ही आती थीं। इसीलिए लेखक इस सभ्यता की बुनियाद को खेतिहर और पशुपालक मानता है।

चरण 4: निष्कर्ष फसलों की खेती, अन्न का संग्रह और जीवन में पशुओं की उपयोगिता स्पष्ट करते हैं कि सिंधु सभ्यता की समृद्धि का मूल आधार कृषि तथा पशुपालन था। नगर-योजना और व्यापार का विकास इसी आधार पर संभव हुआ।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले खेती के प्रमाण दें, फिर पशुपालन के प्रमाण जोड़ें और अंत में दोनों को नगर-जीवन की आर्थिक बुनियाद से जोड़ दें।

अथवा

7(i)(ख). 'डायरी के पन्ने' पाठ में "ऐन फ्रैंक की निजी भावनात्मक उथल-पुथल का दस्तावेज़ भी है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी में ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ लेखिका की निजी अनुभूतियाँ भी दर्ज होती हैं।
- ऐन की किशोरावस्था, पारिवारिक संबंध और स्वतंत्र पहचान की चाह उसके भावनात्मक संघर्ष को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: भय और अकेलेपन का अनुभव नाज़ी अत्याचार से बचने के लिए गुप्त आवास में रहने वाली ऐन का जीवन भय, असुरक्षा और पाबंदियों से घिरा है। बाहर निकलने और सामान्य जीवन जीने की स्वतंत्रता न होने से वह घुटन महसूस करती है। उसके आसपास लोग हैं, फिर भी उसे अपनी बात समझने वाले आत्मीय साथी की कमी अनुभव होती है। वह अपनी डायरी 'किट्टी' को विश्वासपात्र बनाकर मन की बातें कहती है। इससे डायरी केवल युद्ध की घटनाओं का विवरण नहीं रह जाती, बल्कि उसके अकेलेपन की अभिव्यक्ति बन जाती है।

चरण 2: संबंधों और आत्मपहचान का द्वंद्व ऐन को लगता है कि बड़े उसकी भावनाओं को पूरी तरह नहीं समझते। माँ से उसके मतभेद और बड़ों की आलोचनाओं से उपजा आक्रोश उसके किशोर मन की संवेदनशीलता बताते हैं। पीटर के प्रति आकर्षण में उसे आत्मीयता और सहारे की खोज दिखाई देती है। वह अपने व्यवहार पर विचार भी करती है और अपनी स्वतंत्र सोच तथा स्त्री की गरिमा को मान्यता दिलाना चाहती है। इस प्रकार रोष, स्नेह, आशा और आत्ममंथन एक साथ उसकी डायरी में व्यक्त होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः ऐन की डायरी युद्ध और यहूदी उत्पीड़न का साक्ष्य होने के साथ उसके भय, अकेलेपन, प्रेम, पारिवारिक तनाव और व्यक्तित्व के विकास का निजी भावनात्मक दस्तावेज़ भी है।

त्वरित सुझाव: ऐन की भावनात्मक उथल-पुथल समझाते समय गुप्त आवास का भय, पारिवारिक मतभेद और आत्मीयता की खोज को जोड़िए।

7(ii)(क). 'डायरी के पन्ने' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि आधुनिक समाज में महिलाओं के प्रति पुरुषों के दृष्टिकोण में बदलाव आया है।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में ऐन स्त्रियों के श्रम, मातृत्व और स्वतंत्र व्यक्तित्व के सम्मान का प्रश्न उठाती है।
- दृष्टिकोण में बदलाव का अर्थ स्त्री को पुरुष के समान अधिकार और अवसर वाला व्यक्ति स्वीकार करना है।

चरण 1: पाठ में उठे असमानता के प्रश्न को समझना ऐन स्त्री को हीन मानने की प्रवृत्ति का विरोध करती है। वह स्त्री के कष्टों और मानव जीवन में उसके योगदान को पर्याप्त सम्मान न मिलने पर प्रश्न उठाती है। उसकी दृष्टि में स्त्री का मूल्य केवल पत्नी या माँ की भूमिका तक सीमित नहीं किया जा सकता; उसकी अपनी बुद्धि, आकांक्षाएँ और स्वतंत्र पहचान भी हैं। यही विचार आधुनिक दृष्टिकोण को परखने का आधार है।

चरण 2: आधुनिक दृष्टिकोण का बदलाव आधुनिक समाज में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी बढ़ने के साथ अनेक पुरुष उन्हें निर्णय लेने में समान भागीदार मानने लगे हैं। घर और कार्यक्षेत्र में उनकी योग्यता तथा स्वावलंबन को स्वीकार किया जाता है। यह बदलाव ऐन की समान सम्मान की आकांक्षा के अनुकूल है। फिर भी सभी जगह भेदभाव समाप्त नहीं हुआ है; इसलिए

बदलाव को प्रगतिशील प्रवृत्ति के रूप में समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पुरुषों के दृष्टिकोण में स्त्री को आश्रित मानने से आगे बढ़कर समान अधिकारों वाली सहयोगी मानने का बदलाव आया है; इसे पूर्ण समानता तक पहुँचाना अभी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ऐन की स्त्री-सम्मान की चिंता को शिक्षा, स्वावलंबन और निर्णय में समान भागीदारी से जोड़िए।

अथवा

7(ii)(ख). 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेष किसी सभ्यता की नगर-योजना, जीवनशैली और संस्कृति के प्रमाण होते हैं।
- पाठ में सिंधु सभ्यता की पहचान सुव्यवस्थित नागरिक जीवन और कलाबोध से होती है।

चरण 1: नगर-योजना और नागरिक सुविधाएँ सिंधु घाटी सभ्यता के नगर योजनाबद्ध थे। सड़कों, गलियों, पकी ईंटों के मकानों और जल-निकासी की सुव्यवस्था से विकसित नागरिक चेतना दिखाई देती है। कुएँ, स्नानघर और मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार स्वच्छता तथा सामुदायिक सुविधाओं के महत्त्व को स्पष्ट करते हैं। यह व्यवस्था बताती है कि निवासियों के दैनिक जीवन की आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता था।

चरण 2: संस्कृति और सामाजिक जीवन मुहरों, मूर्तियों, मृद्भांडों और आभूषणों से लोगों के शिल्प-कौशल तथा सौंदर्यबोध का परिचय मिलता है। खेती और पशुपालन के साथ व्यापार भी जीवन का आधार था। पाठ में भव्य राजमहलों की अपेक्षा सामान्य नागरिकों की सुविधाओं की प्रधानता उभरती है। उसकी पहचान शक्ति के प्रदर्शन के स्थान पर सांस्कृतिक परिष्कार और सुसंगठित जीवन से बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष सुव्यवस्थित नगर-योजना, स्वच्छता, जल-व्यवस्था, विकसित शिल्प, व्यापार और नागरिक सुविधाओं को महत्त्व देना सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: विशेषताएँ लिखते समय हर बिंदु को किसी अवशेष से जोड़िए, जैसे नालियों से स्वच्छता और मुहरों से शिल्प।